(अ) कवि परिचय

1. हरिवंश राय बच्चन

जन्म—27 नवम्बर, 1907 मृत्यु—18 जनवरी, 2003

जीवन परिचय— श्री हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म 27 नबम्बर, 1907 को इलाहाबाद के प्रताप जिले के छोटे से गाँव पट्टी में हुआ था। इनके पिता प्रताप नारायण श्रीवास्तव और माता सरस्वती देवी थी। इनकी मृत्यु 2003 को मुंबई में हुई।

शिक्षा— इन्होंने अपनी शिक्षा म्यूनिसिपल स्कूल से शुरू की थी। उर्दू सीखने के लिए कायस्थ स्कूल चले गए। 1938 में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से इंग्लिश लिटरेचर में एम. ए. किया और 1952 तक वे इसी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर भी रहे और पी. एच. डी. करने इंग्लैण्ड कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी गए।

व्यक्तित्व— व्यक्तिवादी गीत, कविता या हालावादी काव्य के अग्रणी कवि थे। वे उत्तर छायावाद काल के लोकप्रिय कवियों में से एक थे। बच्चन मुख्यत: मानव भावना अनुभूति, प्राणों की ज्वाला तथा जीवन संघर्ष के आत्मनिष्ठ कवि हैं।

रचनाएँ—दिन जल्दी-जल्दी ढ़लता है, बच्चे प्रत्याशा में होंगे, नीड़ों से झाँक रहे होंगे, मधुशाला, मधुकलश, मधुबाला, आत्मपरिचय, सतरंगिनी, खादी के फूल **काव्य संग्रह** हैं।

डायरी—प्रवासी की डायरी।

अनुवाद— हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ, बच्चन ग्रंथावली।

भाषा— लेखन में अवधी व हिन्दी भाषा थी। सहजता और संवेदनशीलता उनकी कविता का विशेष गुण है। इन्होंने बड़े साहस, धैर्य और सच्चाई के साथ सीधी-सादी भाषा और शैली में सहज कल्पनाशीलता और जीवंत बिम्बों से सजाकर, सँवारकर अनूठे गीत दिये हैं। स्वाभाविकता एवं बोलचाल की भाषा होते हुए भी यह प्रभावशाली है। लोकधुनों पर अनेक गीत लिखे।

साहित्य में स्थान— दो चट्टानें कृति के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार तथा एक्रो एशियाई सम्मेलन के कमल पुरस्कार से सम्मानित। बिड़ला फॉउंडेशन द्वारा उनकी आत्म-कथा के लिए सरस्वती सम्मान और 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

Scanned with CamScanner

2. कुँवर नारायण

जन्म—19 सितम्बर, 1927 मृत्यु—15 नवम्बर, 2017

जीवन परिचय—कुँवर नारायण का जन्म 19 सितम्बर, 1927 को फैजाबाद, उत्तरप्रदेश में हुआ था।

शिक्षा—इन्होंने इंटर तक की शिक्षा विज्ञान वर्ग से प्राप्त की थी। साहित्य में रुचि होने के कारण उन्होंने 1951 में अंग्रेजी में एम. ए. लखनऊ विश्वविद्यालय से किया।

व्यक्तित्व—हिन्दी के सम्मानित कवियों में गिने जाने वाले कुँवर नारायण जी की प्रतिष्ठा और आदर हिन्दी साहित्य की भयानक गुटबाजी से परे सर्वमान्य हैं। कला की विभिन्न विधाओं में गहरी रुचि रखने वाले रसिक विचारक के समान है। कुँवर जी को अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान को देखने के लिए जाना जाता है। ये पूरी तरह नागर संवेदना के कवि हैं।

Scanned with CamScanner

रचनाएँ—काव्य संग्रह—चक्रव्यूह, तीसरा सप्तक, हम-तुम, अपने सामने कोई दूसरा नहीं।

खंडकाव्य—आत्मजयी।

कहानी संग्रह—आकारों के आस-पास।

समीक्षा—आज और आज से पहले, मेरे साक्षात्कार आदि।

भाषा शैली—संस्कृत, उत्तर भारत की स्थानीय बोलियाँ, फारसी, अरबी जैसी इस्लामी भाषाओं के अलावा, अंग्रेजों के बढ़ते वर्चस्व और उनकी भाषा द्वारा भारतीय सामाजिक संरचना के हर आयाम के लिए किए गए गहरे औपनिवेशिक हस्तक्षेप में है, आधुनिक हिन्दी साहित्य की खड़ी बोली, विचारों में खुलापन, भाषा और विषय की विविधता कविताओं के विशेष गुण हैं। संशय, संभ्रम, प्रश्नाकुलता कविता के बीज शब्द हैं।

साहित्य में स्थान— 2009 में वर्ष 2005 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित देश के सबसे बड़े साहित्य सम्मान से, साहित्य अकादमी सम्मान, कुमार आशान पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, राष्ट्रीय कबीर सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय, प्रीमियो फेरेनिया सम्मान और 2009 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया है।

Scanned with CamScanner

3. रघुवीर सहाय

जन्म— 9 दिसम्बर, 1929 **मृत्यु**— 30 दिसम्बर, 1990

जीवन परिचय—रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसम्बर, 1929 को लखनऊ में हुआ। इनकी मृत्यु 30 दिसम्बर, 1990 को हुई।

शिक्षा— 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया और 1946 से ही साहित्य सृजन करने लगे।

व्यक्तित्व—रघुवीर सहाय समकालीन हिन्दी कविता के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनके साहित्य में पत्रकारिता का और पत्रकारिता पर साहित्य का गहरा असर दिखाई पड़ता है। इनकी कविताएँ मानव संबंधों की खोज करती हैं। जिन आशाओं और सपनों से आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी उन्हें साकार करने में जो बाधाएँ आ रही हों उनका निरंतर विरोध करना उनका रचनात्मक लक्ष्य रहा है।

रचनाएँ—सीढ़ियों पर धूप, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं।

भाषा-शैली—रघुवीर सहाय की अपनी काव्य-शैली है, उनकी भाषा सरल, साफ-सुथरी एवं सधी हुई है। उनकी भाषा शहरी होते हुए भी सहज व्यवहार वाली है सजावट की वस्तु नहीं है। रघुवीर सहाय आधुनिक काव्य भाषा के मुहावरे को पकड़ने में अत्यंत कुशल हैं। मार्मिक उजास और व्यंग्य एवं बुझी खुरदुरी मुस्कान उनकी कविता के गुण हैं। छंदानुशासन के लिहाज से वे अनुपम हैं।

साहित्य में स्थान—1984 में इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नवभारत टाइम्स दिल्ली में विशेष संवाददाता रहे। 1969 से 1982 तक प्रधान संपादक रहे। 1982 से 1990 तक स्वतंत्र लेखन किया। कवि होने के साथ-साथ निबंध लेखक, कथाकार तथा आलोचक रहे।

Scanned with CamScanner